

५९९८

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ घुळें.

— हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४२८ (६२५)

ग्रंथ नाम आर्याभारती.

विषय आर्या.

(1)

श्रीराम

॥ वाधावर अवर त्रीशुद्ध धरनि

॥ धरडीमडीमीउमडंमरुवाज

॥ तराजपचा मन अनदरुपी

॥ जमजय ॥ ध ॥ त्रीशुद्ध स्वपर

॥ लीय आसुर सीधार न मोहन

॥ माघानंदी का उरुपी जपज

॥ यभुपकर त दीपा ॥ १ ॥ रु

॥ लु लु आदा चोरि

॥ को ई ॥ नाथी दि लु हा

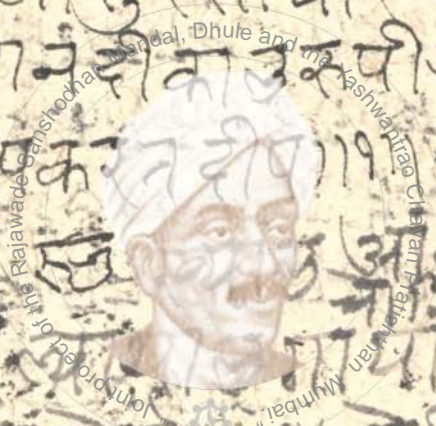
॥ मि यां को ई ॥ चोरि चोरि

॥ आं द ॥ या ॥ वे मा पु का ॥

॥ ग लु व ॥ मि यां को ई ॥ १ ॥

श्रीम श्रीराम जय राम जय ज

य राम



॥ गवांस्पृष्टानमस्कृत्वा कृत्वा च न प्रदक्षि
॥ णा ॥ प्रदक्षिणा कृत्वा तेन सप्तद्वीपाव
॥ सुधरा ॥ १॥ रु

॥ नोदत्तां दत्ता च त्रकस्मेदत्ता बी ॥ २ ॥
॥ णेन पुरि ॥ कीष्क दारा जं वा कपिन
॥ दत्तं भवां तरे कम्पा ॥ १॥ रु

॥ आदौ मज्जेन चैव चारुति उकं नेत्रां
॥ जनं कुंडलं ॥ तारा ताक्ति कपुष्पहा
॥ कुरबै सुं कार कन परे ॥ अंगे चै रन

॥ उपहंसगमनक्षुद्रावलि घंटिका ॥
॥ तांबूलं करकं कणं चतुरताः शृगा
॥ रकाः षा उशा ॥ १॥ रु

॥ विप्रो वृक्षो मूकं उकं तत्र सध्या वेद
॥ शाखा धर्म कर्माणि पत्रं ॥ तस्मान्मू
॥ लं यत्न तो रक्षणी यं छिने मूले नेव
॥ पत्रे न शाखा ॥ १॥ रु

॥ आलोठ्यां सर्व शास्त्रणीवीचार
॥ यपुनः पुना ॥ वीधीमेकं सुनिः ची
॥ तंध्याय न नारायणः सदा ॥ १ ॥

रुज आरती गंगेची रु

ब्रह्मगीरीचा बोध प्रदीत जाळा ॥ पू
र्वपंथमपंथं वीक्षासुनिगेळा ॥ नाना
तरंगलता धांवती आती उपळा ॥ से
खीसहजसीधतसामाउनी गेळा
॥ १ ॥ जयदेव जयदेवी जयदेवी जयदेवी
गा ॥ तुझीयादवषमात्रं भवतापभग
॥ ध्यासंयोगी जिवनपाहतां निज
जहृष्टी ॥ पूर्वापरतटाकनभासेश्ट
ष्टी ॥ आरदनाखाळाळचंचळतामुठी
मजनमात्रं होए भवभयातुटी ॥ २ ॥
मुळीचाची बोध अहंवेटी फुटला ॥ भी
भाकारं नानास्थानी वाहावला ॥ नीज
पंथं मोहरतां ऐक्यासीड ॥ ३ ॥ रामीरा
मसीसंगमजीला ॥ ४ ॥

(५)

श्रीराम

॥ भली पाइं तनु की माण्या वांरि दाण्या
 ॥ लोक दीक हे रुठ की ॥ ६ ॥ आव प हर
 ॥ मनु ध्या तु सा ज्या ॥ दुक मुख डा बत
 ॥ लावी ॥ भा। रुस की माण्या ॥ भा। रु १.२

शुपद

॥ सुघर बन डु ला आ जे बाब न आ
 ॥ यो ॥ वो होर से च न घ उ म को छ
 ॥ त्र किय ये म र क को ह सं आ
 ॥ मर का यो ॥ ६ ॥ रा ज्या धी राजा
 ॥ ध्र मा हारा ज छ त्र प त ॥ इंद्र जो
 ॥ क भु व जो क च ट था यो ॥ १ ॥

क

॥ ६ ॥ १ ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

(5) ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अरुणो नाम सुदेवाधीश्वरः ॥
॥ नाममगकदायक ॥ नामने
॥ लोकयनावक ॥ ॥ नामही
॥ तीकायेसीनी ॥ नामेडुड
॥ तीडुवाव ॥ नामीरामदास
॥ सुणेसर्वसाधी हुयजे
॥ जेधरा ॥

॥ ॥



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com